सीमित वितरण हेतु

किसानों की आवाज का दस्तावेज

cecoedecon

आवाज़...

वर्ष–9 अंक–17 अप्रैल 2020 – मार्च 2021

किसान सेवा समिति महासंघ

एक दिवसीय किसान कार्यशाला सम्पन्न

माधोराजपुरा @ पत्रिका. सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों के परस्पर समन्वय से ही विकास रूपी गंगा बहाई जा सकती हैं। मिलकर काम करने से सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के वास्तविक तबके के साथ जरूरतमंदों को मिल सकता है। यह बात पंचायत समिति के विकास अधिकारी नारायण सिंह ने गुरुवार को यहां ब्लॉक स्तरीय किसान सेवा समिति कार्यालय परिसर में कही। वे यहां किसान सेवा समिति तथा सिकोईडीकोन के संयुक्त बैनर तले आयोजित स्थानीय विकास के मुद्दों एवं जन समस्याओं पर संवाद विषयक एक दिवसीय कार्यशाला को सम्बोधित

माधोराजपुरा में कार्यशाला को सम्बोधित करते विकास अधिकारी नारायण सिंह।

इस मौके पर ब्लॉक मुख्य उप निदेशक आलोक व्यास, चिकित्साधिकारी डा.दिनेश कुमार शर्मा, सहायक कृषि अधिकारी धर्मपाल बैरवा, पशु चिकित्साधिकारी डा.अनिल आर्य, प्रधानाचार्य प्रवीण कुमार चौधरी व निशा लाल, समिति अध्यक्ष हनुमान शरण यादव, चिकित्साधिकारी प्रभारी डा. महेन्द्र ब्रह्मभट्ट,

भीतर के पन्नों में

1. लोकतान्त्रिक मूल्यों का अवमूल्यन
2. उजड़ते चरागाह का जिम्मेदार कौन?
3. क्यों नहीं सुनी पर्यावरणविदों की आवाज़
4. किसान आन्दोलन के प्रणेता
5. शिक्षा बना हथियार
6. दलितों में एकता लाने का एकमात्र समाधान अम्बेडकरवाद अपनाना
7. निर्धन किसान जीवन
8. ऐसे थे जार्ज वाशिंगटन
9. युवा मण्डल ने बदला गाँव का ढाँचा
10. पंचायत राज प्रतिनिधि–कार्यशाला
11. स्थानीय विकास के मुद्दों एवं जन समस्याओं पर जन संवाद
12. मालपुरा किसान सेवा समिति व युवा मंच के मुद्दों के समाधान का प्रयास
13. कोरोना संकट–सहयोग

किसान सेवा समिति महासंघ

(स्वराज कैम्पस), एफ–159–160 सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थागत क्षेत्र, जयपुर–302022

द्वारा प्रकाशित

सम्पादकीय .....

लोकतान्त्रिक मूल्यों का अवमूल्यन

पूर्व प्रधानमन्त्री चौधरी चरण सिंह का कथन था, देश की खुशहाली का रास्ता गाँवों एवं खेतों से होकर गुजरता है। उन्होंने किसानों को एक हाथ में हल व दूसरे हाथ में कलम व एक आँख खेत की मेड़ पर एक लखनऊ (शासन) पर रखने का गुरू मन्त्र दिया। परन्तु किसानों ने उनके दूरदर्शी सन्देश को गहराई से नहीं समझा।

तभी तो महीनों से दिल्ली की सीमाओं पर चल रहें किसान आन्दोलन से केन्द्र सरकार की नींद नहीं टूटी है न ही किसान आन्दोलन में भाहीद हुये किसानों के लिये संवेदना व्यक्त करने की फुर्सत मिली है। इसके विपरीत इस अनुशासित एवं अहिंसात्मक आन्दोलन को कुचलने के लिये केन्द्र सरकार ने मीडिया एवं राष्ट्रीय जांच एजेन्सियों का जो दुरूपयोग किया वह शर्मनाक है।

आजादी के पहले व बाद में भी समाचार पत्र (सम्पादकों) मीडिया की निष्ठा एवं भावना देश व राज्य की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक सन्दर्भों में निष्पक्षता से जुड़ी रही। लोकतन्त्र का प्रहरी मीडिया पारदर्शी व जवाबदेही रहा है, अपने मूल्यों के प्रति सजग एवं समर्पित रहा। पर आज के किसान आन्दोलन के सन्दर्भ में अधिकांश मीडिया धरने पर बैठे किसानों के दु:ख दर्द व उनके उठाये मुद्दों को प्रकाशित (प्रसारित) करने के बजाय किसानों का समर्थन करने वाले एक्टिविष्टों में आतंकवादी व खालिस्तानी तलाशने का कार्य कर रहा है।

जो सामाजिक कार्यकर्ता किसान आन्दोलन का समर्थन कर रहे हैं, उनकी देश भक्ति पर सवाल उठाये जा रहे है। जबकि तीनों कानून बिना किसान संगठनों व विपक्ष से संवाद के लाये गये। प्रचण्ड बहुमत के अहंकार में डूबी केन्द्र सरकार किसान आन्दोलन का समर्थन करने वाले कार्यकर्ताओं को राष्ट्र विरोधी घोषित करने हेतु राष्ट्रीय जांच एजेन्सियों का सहारा भी ले रही है।

सामाजिक कार्यकर्ता पर्यावरण प्रेमी दिशा रवि व अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी अभिव्यक्ति की आज़ादी पर क्रूरतम प्रहार है। इस सरकार ने पिछले दो वर्ष में औसतन रोजाना नौ लोगों पर राष्ट्रद्रोह के आरोप लगाये, लेकिन कोर्ट में 100 में से मात्र 2 पर आरोप तय हो पाया। मा. सुप्रीम कोर्ट की कई संविधान पीठों ने भी कहा है, चाहे कितने ही कठोर शब्दों में सरकार की निन्दा की जाये, इस कृत्य को देशद्रोह नहीं मान सकते।

आज देश में पूर्व प्रधान मन्त्री लाल बहादुर शास्त्री की जय–जवान, जय–किसान का नारा घायल हो तड़प रहा है। चौधरी चरण सिंह का आर्थिक दर्शन था, अपनी पुस्तक इकोनोमिक, नाईटमेकर ऑफ इण्डियाः इट्स कॉलेज एण्ड क्योर में उन्होंने भारत की दुर्दशा का वर्णन करते हुए लिखा है कि किस तरह दौलत पैदा करने वाला अपने आपको बेबश समझता है, उसकी मेहनत पर किस तरह थोड़े लोग धन का संचय करके बड़े लोग बन जाते हैं।

गांधी जी का स्वराज का अर्थ था ग्रामीण जनता की गरीबी दूर करना। परन्तु हो रहा विपरीत है। देश का नेतृत्व शहरी सफेदपोसों के हाथो में रहा, जिनकी न तो खेती – किसानी की समझ है न ग्रामीण जनता की की वास्तविक मुद्दों की पहचान है।

अब किसानों को करवट लेने का वक्त आ गया है कि वह अपना आत्म सम्मान एवं आत्म गौरव की भावना जगाते हुये अपने वाजिब हक के लिये आपसी कटुता भुलाकर जात–पांत से ऊपर उठकर राजनैतिक विचारधारा लांघकर किसान हित हेतु संगठित स्वरूप हेतु सतत प्रयासरत हो। यही किसान के लिये अवसर है तो इस लोकतान्त्रिक देश में केन्द्र को भी संवेदनशील व जवाबदेह बनकर किसान संगठनों के साथ सीधा संवाद करने की पहल करनी चाहिये, जिससे किसान संगठन सहमत हो। यही किसान व देश के हित में है।

संरक्षक व मार्गदर्शन :
श्रीमती मंजू जोशी

संपादक :
भगवान सहाय ढाधीच

ग्राफिक्स :
रामचन्द्र शर्मा एवं भँवरलाल

उजड़ते चरागाह का जिम्मेदार कौन?

हमारे देश की संस्कृति, समृद्धि व आजीविका के मुख्य आधार मवेशी रहे हैं और पशुओं की जीवन रेखा चरागाह। परन्तु सरकारों की नीतियां एवं आम समुदाय की चरागाह के प्रति उदासीनता के चलते क्रमशः ये लुप्त होते जा रहे हैं। कहीं विकास के नाम पर अधिग्रहित कर लिये गये, तो कहीं भू–माफियों व बाहुबलियों ने चरागाहों को अपने कब्ज़े में ले लिया है। इस सम्बन्ध में न तो राजस्व अधिकारियों की कोई जवाबदेही तय है न सरकार की स्पष्ट नीति। जबकि भारत में विदेशी भाासकों के समय से ही प्रत्येक गाँव में चरागाह थे व पूर्णतः सुरक्षित थे। कोई अवैध अतिक्रमण की हिम्मत नहीं जुटा पाता था।

पहले चरागाह नदियों व तालाबों के किनारे हुआ करते थे, जिससे पशुओं को खाना व पानी एक ही स्थान पर मिल सके। जहां नदी तालाब नहीं होते, वहां पानी भरे हुऐ कुंए व बावड़ी होते थे, जिसमें एक साथ 20–25 पशु पानी पी सकते थे। कुण्ड के ऊपर रैहट थी, उस रैहट को चलाकर कुण्ड खेली भरते रहते ओर पशुओं को पानी पिलाया करते थे। देश का पशुधन चरागाहों से ही सम्भाला जाता रहा है। पशुधन इस देश की कृषि, व्यापार, उद्योग आदि का बुनियाद रहा है व पशुधन संवर्द्धन समृद्ध चरागाहों पर आधारित था। दुर्भाग्यवश भारत में चरागाह उपेक्षित होते गये, जिसका असर पशुधन पर पड़ा।

ब्रिटेन स्वयं के लिये अनाज का आयात करता है व जापान रूई का आयात करता है। इसके बावजूद ये देश चरागाहों का महत्व समझते हुये चरागाह सुरक्षित रखते हैं। ब्रिटेन हर एक पशु के लिये औसतन 3–5 एकड़ जमीन चरने के लिये अलग रखता है। जर्मनी 8 एकड़, जापान 6.7 एकड़ और अमेरिका हर एक पशु के लिये 12 एकड़ जमीन चरने के लिये अलग रखता है, जबकि इसकी तुलना में भारत में एक पशु के चराऊ जमीन करीब एक एकड़ रह गयी है। यानि अमेरिका में 12 एकड़ में एक पशु चरता है, जबकि भारत में एक एकड़ में 13 पशु चरते हैं।

1968 में भारत में चरागाह भूमि 3 करोड़ 32 लाख 50 हेक्टेयर की जमीन पर थी व 1974 में यह चरागाह भूमि 3 करोड़ 22 लाख 50 हजार एकड़ हो गयी। सिर्फ 6 वर्षों में 10 लाख एकड़ चरागाह भूमि नष्ट हो गयी। अब तो क्रमशः चरागाहों के लुप्त होने का दौर जारी है, जिसका सर्वाधिक प्रभाव पशुधन पर पड़ा है। आम किसान की आजीविका भी प्रभावित हुई है।

खेती–किसानी व गरीबों को खाद्य सुरक्षा का वादा देने वाली सरकारें किसान, मजदूर व गरीब के नाम पर चुनाव जीतने वाले सांसदगण, विधायकगणों ने न तो घटते चरागाहों पर लोकसभा व विधानसभा में आवाज उठाकर विरोध व्यक्त किया न ही उनके प्रति चिन्ता व्यक्त की। लग रहा है चरागाह बचाना सरकार की प्राथमिकताओं में नहीं है न उनमें एजेन्डे व चुनाव घोषणा पत्रों में चरागाह संरक्षण शामिल हो पाता है।

शुरूआत अंग्रेजों ने की भारत में गायों को कत्लखाने में ढ़केलने की साज़िश के तहत् अंग्रेजों का चरागाहों का नाश करना शुरू किया। लेकिन चरागाह तो लाखों की संख्या में थे, उनका नाश कैसे हो ? इसके लिये उन्होंने योजनाएं

तैयार की। चरागाहों को वीरान एवं कमजोर करने के लिये शिक्षा का सहारा लिया।

ब्रिटिश अर्थशास्त्री समझाते कि चरागाह में पशुओं को छूट देने पर उनके पैर के नीचे जमीन रौंद जाने से घास बिगड़ जाती है। मवेशी के मल–मूत्र से धरती उर्वरा शक्ति खो देती है। जबकि यह सच्चाई है कि चरने के दौरान पशुओं के पैरों तले की जमीन नरम बन जाती है, जिससे घास आसानी से उग जाती है। मवेशियों के मलमूत्र से उपयोगी खाद बनती है।

परन्तु शिक्षण के द्वारा अंग्रेजों ने भारतीयों को उल्टे रास्ते पर चला दिया। हमारे ही खर्चे पर चरागाह जैसी पवित्र भूमि को बंजर बनाने का प्रयास शुरू किये, भूमि के लिये भी छात्रों को दिग्भ्रमित किया। हमारे चरागाहों के प्रति भ्रान्ति फैला चरागाहों को वीरान बनाया। आज जब ग्रामीण क्षेत्र में मज़दूर किसान आजीविका एवं खाद्य सुरक्षा को लेकर संकटग्रस्त है तो चरागाह उनके लिये जीवन–भरण का मूलभूत विषय है।

समय आ गया है सरकार ऐसी स्पष्ट नीतियां बनाये कि विकास के नाम पर कोई भी चरागाह को अधिग्रहित नहीं कर पाये व चरागाह को अतिक्रमण मुक्त हेतु अतिक्रमणकर्ता पर कठोर सजा व जुर्माना का प्रावधान बने। अगर चरागाह पुनः विकसित नहीं होंगे तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव बना रहेगा। गांव का किसान शहर में निरूद्देश्य भटकता दिखाई देगा या रिक्शा चलाते नजर आयेगा।

क्यों नहीं सुनी पर्यावरणविदों की आवाज़

प्रकृति हमारी माता है, जो अपना सर्वस्व अपने बच्चों को अर्पण कर देती है। धरती, नदी, पहाड़, मैदान, वन, पशु, पक्षी, आकाश, जल, वायु आदि हमें जीवन यापन में सहायता देते हैं। ये सब पर्यावरण के अंग हैं। विकास के नाम पर इनका निर्मम दोहन एवं उपेक्षा का भाव आपदाओं को आमन्त्रित करता है। 1947 में अंग्रेज तो चले गये, परन्तु उनके द्वारा बनायी गयी विकास की नीतियां एवं व्यवस्था के खतरों को या तो हमारे नेता समझ नहीं पाये या जानबूझकर अन्जान बने रहे।

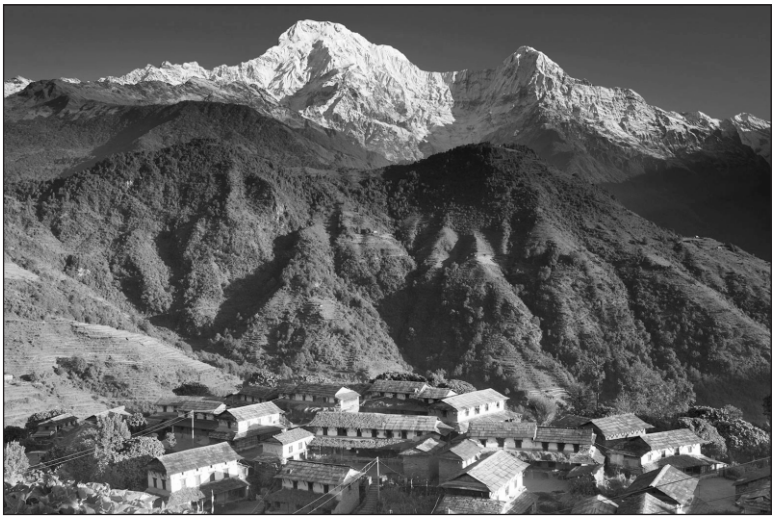

अपने जल संसाधनों, मिट्टी, खनिज सम्पदा, पशुधन, जैव विविधता और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को अनियोजित विकास एवं व्यापारिक लाभ के साधन के रूप में देखने का दुःपरिणाम है, ये प्राकृतिक आपदाएं।

चमोली जिले के जोशी मठ के पास नन्दा देवी ग्लेसियर टूटने से ऋषिगंगा व धोली नदी में जबरदस्त सैलाब आ गया। ऋषि गंगा हाईड्रो पावर प्रोजेक्ट बाँध एवं धोली गंगा नदी पर बने एन.टी.पी.सी. का हाईड्रो प्रोजेक्ट तबाह हो गया। करोड़ो–अरबों का नुकसान व सैंकड़ों लोगों को जान गंवानी पड़ी। सरकार का कहना घटना की जांच करायेंगे– यही रटा रटाया वक्तव्य! आखिर निर्देशों की

अमानुषिक मृत्यु का दौर कब तक चलेगा? किसकी जवाबदेही है? व सरकार ने अतीत से सबक क्यों नहीं लिया? सवाल–जवाब अनुत्तरित है।

जबकि मा. सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर 2013 के केदारनाथ हादसे के बाद उत्तराखण्ड में एक कमेटी बनी थी इसे राज्य में निर्माणाधीन 80 बिजली प्रोजेक्टों पर रिव्यू करना था। साथ ही मा. सुप्रीम कोर्ट ने राज्य के 24 पॉवर प्रोजेक्ट पर रोक लगा दी थी, मगर इसके बावजूद उत्तराखण्ड में पर्यावरण के दोहन का सिलसिला थमा नहीं। जबकि तेजी के साथ पिघलते ग्लेशियर का प्रमुख कारण भूमण्डल में बढ़ते तापमान को बताया जाता है।

इस सबका सीधा सम्बन्ध पर्यावरण (हरे–भरे वृक्षों से) से है। वृक्ष धरती की अनमोल धरोहर है, पर्यावरणविद क्या सामान्य आदमी भी जानता है कि वृक्ष हमें सबकुछ देते हैं, पर हम वृक्ष को क्या देते हैं, यह बड़ा सवाल है? उत्तराखण्ड के हिमालयन क्षेत्र में वृक्ष तेजी से कम हो रहे हैं। अनेक पर्यावरण प्रेमियों ने हरे पेड़ों के संरक्षण में अपना सर्वस्व दाँव पर लगाया व प्रचार–प्रसार से दूर दिन–रात वृक्षों के संवर्धन व उत्तराखण्ड के जंगलों को हरा–भरा करने में लगे रहे है।

इन पर्यावरण प्रेमियों के अनुपम कार्य से सरकार व समुदाय ने न तो प्रेरणा ली न इनके दिखाये मार्ग पर चले। परिणाम सामने है। पकृति को जीतने का सपना देखने वाला मानव प्राकृतिक आपदा पर असहाय नजर आ रहा है। वातावरण में फैली अराजकता के लिये मानव स्वयं दोषी है। उत्तराखण्ड के जंगलों की रक्षा के लिये शुरू किये गये चिपको आन्दोलन के प्रणेता **सुन्दर लाल बहुगुणा** को हिमालय संरक्षण का सबसे बड़ा पर्यावरणविद माना जाता है; टिहरी के पास मरोदा गांव में जन्में सुन्दर लाल बहुगुणा का उत्तराखण्ड के जंगलों को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 50 वर्ष शुरू किये गये चिपको आन्दोलन की बदोलत ही हिमालय के जंगलों और उत्तर भारत की नदियों का संरक्षण हो पाया।

चिपको आन्दोलन से आज की युवा पीढ़ी और पर्यावरण से जुड़े लोग प्रेरणा ले रहे हैं। पदम् विभूषण से सम्मानित श्री बहुगुणा ने हिमालय व नदियों की रक्षा के लिये जीवन भर संघर्ष किया।

करीब 1973 से हिमालय की हरियाली को बचाने के लिये अभियान में जुड़े चण्डी प्रसाद भट्ट ने पर्यावरणविद सुन्दर लाल बहुगुणा से आशीर्वाद लेकर जंगल (पेड़–पौधे) लगाने का अभियान शुरू किया। आज करीब 2 हजार हेक्टेयर जंगल में वृक्षारोपण चण्डी प्रसाद की देन है। पर्यावरण बचाने और समाज सेवा के लिये पदम श्री सम्मान और मेग्सेसे सम्मान से सम्मानित चण्डी प्रसाद भट्ट को उत्तराखण्ड के लोग जंगली के रूप में जानते हैं।

वनों के संरक्षण करने में एक नाम है सच्चिदानन्द भारती का। पेशे से शिक्षक भारती ने गाँव–गाँव, जगह– जगह जाकर लोगों को जल–जमीन–जंगल और पर्यावरण संरक्षण की जरूरत को समझा जाग्रत कर 1500 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में घने वन विकसित कर 20 हजार से अधिक चाल खालों का निर्माण कर सूखी नदी को पुनजीर्वित करने का अद्भुत कार्य किया। सच्चिदानन्द भारती रविवार को छुट्टी के दिन ग्राम देवता के मन्दिर में गांव वालों को इकट्ठा कर वीरान एवं उपजे पहाड़ों पर जाकर 2x4 फीट के गड्ढे खोदते थे, बरसात आने से पूर्व वे समुदाय के सहयोग से हजारों गड्ढ़े तैयार कर लिया करते थे। बारिश के दौरान गड्ढ़ो में जमा होने के दौरान वहां एक पेड़ लगा दिया करते थे, सच्चिदानन्द भारती ने पानी संरक्षण वृक्ष बॉस, तीस काफ़ल दुन जैसे वृक्षों का खूब रोपण किया। आज उनके प्रयास से करीब 15 कि.मी. बंजर पहाड़ हरे जंगल में बदल गये है। उन्होंने बिना सरकारी मदद के अपना अभियान चलाया।

हिमालयी क्षेत्र के पर्यावरणविद दामोदर राठौड़ सीमावर्त्ती तहसील डीडीहाट पिथोरागढ़ में वृक्ष लगाने के अभियान में अनुकरणीय योगदान दिया। 1960 में यहां आये तो उन्हें यहां कटे हुए जंगल व गर्म जलवायु देखकर कुछ करने का संकल्प लिया और चल पड़े उसी रास्ते पर– **जीवन का मकसद बनाया– <u>हरियाली</u>!**

तब से लेकर अब तक राठौड़ साहब ने करीब 15 करोड़ पौधों का रोपण किया है। आई. टी. बी. पी. केन्द्रीय विद्यालय के साथ बनायी गयी हिमालयन ग्रीन ब्रिगेड़ के साथ आज अनेक सामाजिक संस्थाएं व जन– प्रतिनिधि अपना योगदान देते हैं। दामोदर राठौड़ को इन्द्रा प्रियदर्शन वृक्ष मित्र पुरस्कार से भी नवाजा जा चुका है।

इसके अलावा उत्तराखण्ड में जंगलों को बचाने संरक्षित करने एवं नये वृक्षों को लगाने में भारतीय सेना भी वर्षों से कार्य कर रही है– पूर्व थलसेना अध्यक्ष विपिन चन्द जोशी ने उत्तराखण्ड के पर्यावरण संरक्षण हेतु इको टास्क फोर्स का गठन करवाया। भारतीय सेना से सेवानिवृत्त फौज़ियों को इस फोर्स में भर्ती किया गया, इस फोर्स का मकसद है, कुमांऊ एवं गढ़वाल में वनस्पति विहीन पहाड़ियों पर वृक्ष लगाना एवं हरियाली का संरक्षण करना।

इको टास्क फोर्स चमोली जिले के जोशी मठ इलाके व पिथोरागढ़ के चड्डाक की पहाड़ियों पर लाखों हरे वृक्षों का जंगल खड़ा कर चुकी है। इनके अलावा भी सैंकड़ो पर्यावरण साधक पकृति संरक्षण की अनुपम साधना में लगे हुए हैं। प्रकृति बचाने के इनके अविस्मरणीय योगदान को सरकार गम्भीरता से कब लेगी? समझ से परे है।

किसान आन्दोलन के प्रणेता

अकालों की भीषणता, मूल्य वृद्धि में तेज गति, कर्जे के बोझ ब्याज देने की अक्षमता, साहूकारों के अमानुषिक अत्याचार, अपर्याप्त कानूनी संरक्षण के कारण स्वाधीनता के पूर्व भी किसानों में असन्तोष एवं विद्रोह की चिन्गारी फूटी। अनेक प्रान्तों में आन्दोलन हुए। परन्तु ब्रिटिश सरकार ने भी किसानों को उनका हक मिले व संरक्षण मिले इस हेतु अनेक कानून बनायें।

परन्तु दुर्भाग्यवश आजाद भारत में वर्तमान केन्द्र सरकार को खेत–खलिहानों की उठती हुई आह सुनाई नहीं दी व प्रचण्ड बहुमत के अहंकार में डूबी सरकार को सैंकड़ों किसानों के आत्म बलिदान पर आंसू बहाने (दो शब्द बोलने) की फुर्सत नहीं मिली।

इतिहास के पन्ने गवाह है अंग्रेज साम्राज्य के विरोध का प्रथम प्रबल केन्द्र बंगाल रहा तो अंग्रेजों की किसान विरोधी नीतियों का प्रबल विरोध भी बंगाल से ही शुरू हुआ। 1770 से 1790 की कालावधि में बंगाल के कुच बिहार दिनाजपुर जलपायी गुड्डी मेमन सिंह आदि उत्तरी जिलों में किसानों के सहयोग के सक्रिय सहयोग से सन्यासियों, फकीरों ने अंग्रेज साम्राज्य के खिलाफ़ सशस्त्र प्रतिकार किया। किसानों के असन्तोष व बढ़ते विद्रोह के कारण अंग्रेज सरकार को 1885 में बंगाल टेनेन्स एक्ट लाकर किसानों को कानूनी संरक्षण देने का कार्य किया। तो महाराष्ट्र में किसान मुद्दों पर चल रहे आन्दोलन को लेकर सरकार ने नरम रूख अपनाया व 1875 में दी डेक्कन एग्रीकल्चर रिलीफ एक्ट महाराष्ट्र में पारित किया गया। 1902–1903 में पंजाब एलीएग्र एक्ट पारित कर किसानों को (खेती–किसानी) को संरक्षण दिया।

उपरोक्त किसान आन्दोलन सामूहिक नेतृत्व पर आधारित रहे। अनेक किसान नेता व संगठन हुये, जिन्होंने किसान हित के मुद्दों पर धार दी–

सन् 1923 में श्री स्वामी सहजानन्द ने किसान सभा संगठन खड़ा किया, उन्होंने किसानों के साथ मज़दूरों को जोड़ा। उनकी स्पष्ट मान्यता थी किसानों का कल्याण सम्पूर्ण ग्राम से जुड़ा है। किसान आन्दोलन में बहुत बड़ा योगदान श्री एन. जी. रंगा का है उन्होंने सम्पूर्ण किसान परिवार को संगठित करने का विचार रखा, उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में जा–जाकर

सभी किसान समुदाय व खेतीहर मज़दूर को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया।

तात्या भील एवं उमा जी नाईक स्वयं किसान थे व किसानों की सहायता से ही उन्होंने अंग्रेज साम्राज्य को उखाड़ने का संघर्श किया था। भारतीय कृषक समाज का गठन श्री पंजाब राव देशमुख ने किया वे स्वयं अच्छे किसान थे। किसानों के प्रति उनकी हमदर्दी थी। किसान पंचायत–समाजवादियों ने बहुत वर्षों तक हिन्द किसान पंचायत संस्था चलायी, मामा बालेश्वर ने भी किसान मुद्दों पर महत्वपूर्ण कार्य किया।

किसान यूनियन के संस्थापक श्री नारायण सामी नायडू ने तमिलनाडू में किसान मुद्दों पर प्रभावी आन्दोलन चलाये। शेतकारी संगठन– महाराष्ट्र के **शरद जोशी** ने नारा दिया– उत्पादन खर्चे पर आधारित कृषि उत्पादित वस्तुओं का मूल्य मिलना चाहिये। भारतीय किसान संघ – दत्तोपन्त ठेगड़ी ने स्थापना की। इनका जोर किसानों का संगठनात्मक ढ़ांचा मज़बूत करने पर रहा।

किसान जाग्रति आन्दोलन के इतिहास में महात्मा फूले का विशेष स्थान है, किसानों के जीवन का उन्होंने गहरायी से अध्ययन किया था। पैदल गाँव–गाँव गये थे, किसानों की सभाएं की थी व जागरूकता की अलख़ जगायी थी। किसान आन्दोलन को समर्थन करने वाले महापुरूषों में श्री राजा राम मोहन राय, दक्षिणा रंजन मुखर्जी, बंकिम चन्द चटर्जी रहे।

श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने नील दर्पण तथा जमींदारा दर्पण पुस्तकें किसान मुद्दों पर लिखी। श्री अभय चरण दास ने इण्डियन रैयन्त नामक पुस्तक लिखी, महात्मा फूले ने सैत कन्पाचा व आशूड व लोकमान्य तिलक ने केशरी के माध्यम से किसानों की बात जनता के सामने रखी।

अंग्रेज राज में समय–समय पर हुये किसान आन्दोलनों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, बल्कि अंग्रेजी साम्राज्य को हिलाकर रख दिया। अनेक किसान आन्दोलनों में महात्मा गांधी जी का भी स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता था, जिससे आन्दोलन अहिंसक होते थे।

- **दक्कन का विद्रोह**– इस आन्दोलन की शुरूआत दिसम्बर, 1874 में महाराष्ट्र के शिरूर तालुका के कारहाड़ गाँव से हुई यहां पर किसानों सूदखोरों व साहूकारों के विरूद्ध आन्दोलन शुरू किया, यह दशक के विभिन्न भागों तक फैला।
- **कूका विद्रोह 1972** में पंजाब के नामधारी सिखों द्वारा किया गया यह एक सशस्त्र विद्रोह था। कृषि सम्बन्धी समस्याओं एवं अंग्रेजों द्वारा गायों की हत्या को बढ़ावा देने के विरोध में यह विद्रोह किया गया। श्री बालक सिंह तथा उनके अनुयायी गुरू रामसिंहजी ने इसका नेतृत्व किया था। कूका विद्रोह के दौरान 66 नामधारी सिंह शहीद हो गये थे।

  रामोसी किसानों का विद्रोह महाराष्ट्र के वासुदेव बलवन्त फड़के के नेतृत्व में हुआ। इन्होंने जमीदारों के अत्याचार के विरूद्ध विद्रोह का बिगुल फूँका था।
- **तैभागा आन्दोलन**– 1946 में बंगाल का तेभागा आन्दोलन फसल का दो–तिहाई हिस्सा उत्पीड़ित किसान (बटाईदार किसानों को दिलाने के लिये किया गया था। यह आन्दोलन बंगाल के 15 जिलों में फैला, इसमें करीब 50 लाख किसानों ने भाग लिया।
- **बिजोलिया किसान आन्दोलन**– राजस्थान के मशहूर क्रान्तिकारी विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में 1847 से प्रारम्भ होकर दशकों चला था। किसानों ने जिस तरह निरंकुश नौकरशाही व स्वेच्छाचारी सामन्तों का संगठित होकर मुकाबला किया, वह इतिहास बन गया।

- **नील विद्रोह (चम्पारण सत्याग्रह)** – नील विद्रोह (सन् 1859 में) की शुरूआत बंगाल के किसानों के द्वारा की गयी। दूसरी ओर बिहार के चम्पारन में अंग्रेज बाग मालिकों ने किसानों से लिखवा लिया था, जिसके अन्तर्गत किसान को जमीन के 3/20 हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था। 1917 को गांधी जी ने किसान हित विरोधी निर्णयों के खिलाफ अपना पहला सत्याग्रह प्रदर्शन किया।
- **खेड़ा सत्याग्रह**– गांधी ने 1918 में किसानों की समस्याओं को लेकर आन्दोलन शुरू किया। गुजरात स्थित खेड़ा में कुनबी पाटीदार किसानों ने सरकार से लगान में राहत की मांग की। लेकिन उन्हें कोई राहत नहीं मिली। गांधी जी ने 22 मार्च, 1918 को खेड़ा आन्दोलन की बागडोर सम्भाली।
- **बारदोली आन्दोलन** – 1928 में किसानों द्वारा लगान न देने का आन्दोलन चलाया। सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में सभी किसान समुदायों ने भाग लिया।

चौधरी चरण सिंह और चौधरी देवी लाल भी किसान नेता थे। खेती–किसानी के मुद्दों किसान हितों का जीवन पर्यन्त संरक्षण करते रहे। लेकिन उनकी राजनैतिक पार्टियां थी। श्री महेन्द्र सिंह टिकेत विशुद्ध किसान नेता थे, जिन्होंने अपनी संगठन भारतीय किसान यूनियन के झण्डे तले किसान मुद्दों पर उत्तर प्रदेश व दिल्ली सरकार की तख्त को हिलाकर रख दिया था, व सरकार को उनकी मांगे माननी पड़ी थी।

भारत का अन्नदाता किसान एक बार फिर सड़क पर है। केन्द्र की सरकार द्वारा लाये गये कृषि कानूनों के खिलाफ़ किसान सड़क पर उतरने को मज़बूर है। किसानों को डर है कि नये कानूनों से मण्डियां खत्म हो जायेंगी साथ ही न्यूनतम समर्थन मूल्य पर होने वाली खरीदी रूक जावेंगी। भारत के लगभग 40 किसान संगठन एक मंच पर आकर भारत सरकार को आगाह कर रहे हैं, तीनों कृषि कानून वापिस लो। यह किसान आन्दोलन अनुशासित व लक्ष्य के प्रति समर्पित है।

इस आन्दोलन के समर्थन में पूरे भारत में किसान सड़कों पर उतर आये हैं व विभिन्न राजनैतिक दल भी विधानसभा–संसद से लेकर सड़क तक इनके साथ खड़ा दिखाई दे रहा है तो केन्द्र सरकार की विभिन्न एजेन्सियाँ किसान नेताओं पर अनर्गल आरोप लगाकर लोकतन्त्र शर्मसार कर रही है। जबकि सरकार को नहीं भूलना चाहिये जब किसान संगठित हुआ है तो सत्ता के शिखर हिलते भी रहे हैं व गिरते भी रहे हैं।

शिक्षा बना हथियार

राजस्थान में शिक्षा की स्थिति पर नजर डाले तो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि विद्यालयों की उपलब्धता, तुलनात्मक रूप से बेहतर सुविधाएं एवं राज्य की प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है। राजस्थान में 1991 में शिक्षित जनसंख्या का प्रतिशत मात्र 38% था जो 2001 में बढ़कर 61% हो गया। यह सफलता सरकार के प्रयासों का अच्छा उदाहरण है। वर्तमान में अनिवार्य शिक्षा कानून को ध्यान में रखते हुए सरकार की पुरजोर कोशिश है कि 6 – 14 वर्ष के बच्चे अनिवार्यतः शिक्षा प्राप्त करें। सरकार के अथक प्रयासों से यह परिणाम भी सुखद होने की ही अपेक्षा है।

आज सभी गांवों तक विद्यालय हैं और शिक्षा लोगों की पहुंच में है। अतः विद्यालय में नामांकन शत–प्रतिशत रहता है लेकिन, शिक्षा की गुणवत्ता पर नजर डालें तो आठवीं में अध्ययनरत बच्चों का एक बड़ा प्रतिशत सामान्य गणित के सवालों को हल करने में सक्षम नहीं हैं और उनका भाषा ज्ञान भी दयनीय है। यही कारण है कि शिक्षा से जुड़े बच्चों का

एक बड़ा प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा के दौरान आगे बढ़ने में सक्षम नहीं होता और मजबूरन आगे पढ़ाई नहीं कर पाता।

राजस्थान में शिक्षा की इसी बड़ी कमी के मद्देनजर सिकोईडिकोन ऐसे क्षेत्रों और समुदायों के साथ निरन्तर कार्य कर रही है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी, संसाधनों की कमी, जेंडर भेदभाव इत्यादि के कारण शिक्षा जारी नही रख पाए साथ ही शिक्षण संस्थानों में आयु के अनुरूप सीख को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सिकोईडिकोन बारां जिले की शाहबाद एवं किशनगंज तहसील की सहरिया जनजाति की बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालय का संचालन जनजाति विकास परियोजना के सहयोग से कर रही है। विद्यालय में 8वीं, 9वीं एवं 10वीं में अनुत्तीर्ण या शिक्षा से वंचित बालिकाओं को पास करने हेतु प्रोत्साहित व शिक्षित किया जाता है। विद्यालय का परिणाम औसतन शत–प्रतिशत रहता है।

संस्था, बोध शिक्षण संस्थान के सहयोग से झालावाड़, कोटा, बारां, जोधपुर एवं जैसलमेर जिलों के आवासीय विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु भी प्रयासरत है। सरकार द्वारा संचालित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में दो–दो प्रेरकों की नियुक्ति की गई है जो कि इन बालिकाओं को आयु एवं कक्षा के अनुरूप सीख बढ़ाने में सहयोग करती हैं। वर्तमान में 23 विद्यालयों में प्रज्वला परियोजना के तहत् 2392 बालिकाओं को शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु सहयोग किया जा रहा है।

वर्ष 2018 से नट समुदाय के साथ एक अनोखा प्रयास दो गांवों से प्रारम्भ किया गया जिसका विस्तार वर्तमान में टोंक एवं जयपुर के 27 गांवो तक है। नट समुदाय राजस्थान की अनुसूचित जाति है जो कि पारम्परिक रूप से सदियों से व्यावसायिक यौन कार्य में संलग्न है। समुदाय में बालिकाओं को उच्च शिक्षा में भेजने के उदाहरण बहुत कम है। प्रथम वर्ष के अनुभवों के आधार पर यह परिकल्पना की गई कि यौन कार्य के स्थान पर अन्य व्यावसायिक कार्य को बढ़ावा देने के साथ शिक्षा में निवेश महत्वपूर्ण है।

इसी को ध्यान में रखते हुए 2019 में 50 बालक–बालिकाओं को रू. 10,000 प्रति की छात्रवृत्ति दी गई। इससे परिवार में बच्चों की शिक्षा के प्रति रूझान पैदा हुआ और वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की मांग करने लगे। विद्यालय स्तर पर शाला प्रबंधन समिति एवं अध्यापकों के साथ संवाद में कुछ समस्याएं निकलकर आई। जैसे विद्यालय में शौचालय, पेयजल, खेल की सामग्री इत्यादि की कमी। संस्था ने समुदाय एवं विद्यालय प्रबंधन के साथ मिलकर एक आदर्श विद्यालय बनाने का प्रयास किया, जिससे बच्चे नियमित रूप से आने लगे।

8 गाँवों में तीन कम्प्यूटर केंद्र खोले गए, जिससे अब तक 168 बच्चों को सर्टीफिकेट कोर्स करवाया जा चुका है। साथ ही 130 बच्चे कम्प्यूटर पर कार्य करना सीख चुके हैं। बच्चों को अंग्रेजी, गणित एवं विज्ञान से जुड़ी कमियों को दूर करने के लिए 90 बच्चों को प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा पढ़ाया जाता है। इनमें नट समुदाय के अलावा बागरिया जाति के बालक–बालिकाएं भी हैं। परियोजना के तहत् 118 युवा महिलाओं एवं बालक–बालिकाओं को पुनः शिक्षा में जोड़ने का प्रयास किया गया है। नट समुदाय की 6 बालिकाएं जो कि उच्च शिक्षा में रूचि रखती थी, उन्हें बनस्थली विद्यापीठ में पंजीकृत करवाया गया है ताकि समाज में एक बदलाव आए।

रक्षण परियोजना के तहत् सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिमानों में बदलाव के लिए शिक्षा को हथियार बनाया गया है और दो वर्ष के छोटे समय में समाज में जो बदलाव मानसिक स्तर पर दिख रहे हैं, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि नट बालिकाओं को एक सम्मानजनक एवं सुरक्षित व्यवसाय में लगाने हेतु शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा को बढ़ावा देकर हम उन बच्चियों को एक सुरक्षित भविष्य दे सकेंगे और सदियों पुरानी पुरूष प्रधान परम्पराओं को समाप्त कर सकेंगे।

दलितों में एकता लाने का एकमात्र समाधान अम्बेडकरवाद अपनाना

पी.एल.मीमरौठ, एडवोकेट

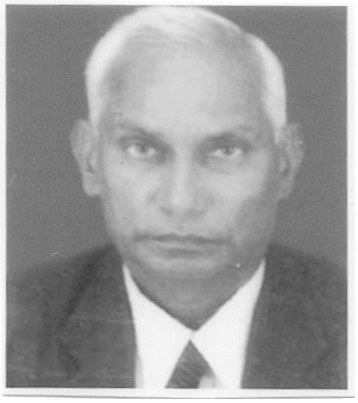

अप्रेल माह में हर जगह बाबा साहब की जयन्ति मनाने की रस्म अदा की जायेगी तो कई स्थानों पर भीड–भाड के साथ दलित नेता और कार्यकर्ता इकट्ठे होकर बाबा साहब को याद करेंगे, कई मौहल्लों, कस्बों और शहरों में एक से ज्यादा जगहों पर इस अवसर पर सभायें, सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे, जिसमें आयोजक यह दर्शाने की कौशिश करेंगे कि वही अपने क्षेत्र में बाबा साहब के सच्चे अनुयायी होने का दावा करेंगे तथा इस अवसर पर अनेक दलित संस्थाऐं व कार्यकर्ता एक दूसरे को प्रतिद्वन्दी तरह कार्य करते दिखाई देंगे।

अम्बेडकर और अम्बेडकरवाद के बारे में पिछले कुछ वर्षों से जनता में बहुत प्रचार–प्रसार हुआ तथा इसके कारण दलितों में गरिमा व आत्मविश्वास पैदा हुआ है और वह अब अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष करने के लिए तैयार होते जा रहे हैं। परन्तु इसके साथ ही यह देखा गया कि उनके अनुयायी अभी भी उनकी मूल शिक्षाओं के अनुरूप कार्य नही कर रहे हैं।

बाबा साहब का पूरा दर्शन हिन्दू धर्म में व्याप्त अमानवीय वर्ण व्यवस्था छुआछूत को समाप्त कर समाज में सभी नागरिकों में समानता, बन्धुत्व, गरिमा व न्याय प्रदान करना है। इस दिशा में भारत में जातिवाद सबसे प्रमुख बाधा है। आज हम दलित समुदाय के लोग बाबा साहब के अनुयायी होने का दावा तो करते हैं परन्तु कभी भी जातिवाद के कुचक्रों से निकालने का प्रयास नही करते। बाबा साहब ने जातियों के बन्धन से निकलने के लिए बौद्ध धर्म को अपना कर दलितों को आह्वान किया था कि दलित हिन्दु धर्म को त्याग कर बुद्ध धर्म को अपनायें जिससे कि उनकी जाति के रूप में पहचान समाप्त हो जाये और वे बुद्ध धर्म के अनुयायी बनकर समाज में समता व गरिमा, व गरिमापूर्ण अपना जीवन जी सकें।

यदि हम बाबा साहब की इस शिक्षा का सही अनुकरण करें तो दलितों में जातिवाद को समाप्त करने की दिशा में ठोस काम कर सकते हैं। आज दलित अनेक जातियों में बंटे हुये हैं। दलित जातियां आपस में रोटी बेटी का सम्बन्ध बनाने से परहेज करते हैं। इन जातियों के नेता वैसे तो गला फाड–फाड कर चिल्लाते हैं कि वे अम्बेडकर के अनुयायी हैं परन्तु इसके विपरीत वे नेता अपने–अपने जाति संगठनों व जाति पंचायतों में ही उलझे रहते हैं परन्तु कभी–भी वे छत्रछाया, रोटी बेटी का व्यवहार शुरू करें ताकि जातियों का वर्चस्व समाप्त हो सके, और सब सामाजिक संस्कार बुद्ध धर्म के अनुसार करवाने की पहल करें मैं समझता हूँ कि दलित जातिवाद खत्म करने का ये ही एकमात्र प्रभावी रास्ता बचा है।

राजस्थान के संदर्भ में यदि देखें तो पता चलेगा कि इस सामन्ती व धर्म भीरू राज्य में भी बाबा साहेब के मूलमंत्रों ''शिक्षित बनो, संगठित हो तथा संघर्ष करो'' के बारें में बड़ी तेजी से प्रचार प्रसार हुआ जिसके परिणाम स्वरूप राज्य भर के दलितों में जागरूकता व गरिमा बढ़ी है और दलित नवयुवकों ने जातिगत उत्पीड़न व भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाना शुरू कर दिया है, पिछले कुछ दिनों से राजस्थान में दलित महिलाओं पर उत्पीड़न की घटनाएँ बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही है यद्यपि ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कठोर कानून है परन्तु इसके बावजूद भी इन पर रोक नहीं लग पा रही है। यह खुशी की बात है कि पिछले कुछ वर्षों में प्रदेश में इस तरह की अत्याचार की घटनाएँ हुई है उनका विरोध जताने के लिए दलित नवयुवक और स्थानीय अम्बेडकरवादी संस्थाओं ने अपने – अपने क्षेत्रों में इन घटनाओं का संगठित रूप से धरना प्रदर्शन करके विरोध प्रदर्शित किया। इनमें से प्रमुख घटनाएँ :– 1. पाली के मोहन मेघवाल हत्याकांड, 2. डांगावास का दलित नरसंहार, 3. बीकानेर का डेल्टा हत्याकांड प्रकरण, 4. बाड़मेर के सिवाना क्षेत्र में संगीता भील की हत्या, 5. मलसीसर झुंझुनू की दलित महिला का सामूहिक बलात्कार प्रकरण, एवं 6. झुंझुनू के ही बगड़ क्षेत्र में दलित छात्रा का सामूहिक बलात्कार है जहाँ पर कि दलित संस्थाओं और

युवकों ने उग्र प्रदर्शन कर पुलिस प्रशासन व सरकार का ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रकार दलितों में जाग्रति तो मिली परंतु दलित संस्थाओं व कार्यकर्त्ताओं में जो पारस्परिक सद्भाव, समन्वय व तालमेल होना चाहिए वह देखने को नहीं मिला हालांकि वे सब अपने आपको अम्बेडकरवादी बताकर दलित हितैषी होने का दावा करते हैं परंतु उनमें अहम्, इगो, एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृति व्याप्त है।

यह भी देखने को मिला कि उत्पीड़न की और अत्याचार की घटनाओं में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं का सर्वप्रथम एफ.आई. आर दर्ज कराने की प्राथमिकता होनी चाहिए तथा उस एफ.आई.आर में सही धाराएं लगी हैं या नहीं और क्या जांच अधिकारी सही व निष्पक्ष जांच कर रहा है कि नहीं इस बात पर ज्यादा ध्यान देना चाहिये। पुलिस प्रशासन व सरकार पर दबाव बनाने के लिए धरना प्रदर्शन व उग्र विरोध दिखाना बहुत जरूरी है। यह खुशी की बात अब स्थानीय स्तरों पर दलित इकट्ठे होकर आवाज उठा रहे हैं। दस पन्द्रह वर्ष पूर्व दलित संगठित रूप से आवाज नही उठाते थे। मेरा दलितों से अनुरोध है कि वे दलित उत्पीडन व अत्याचारों पर रोक लगाने व अत्याचारियों को सजा दिलवाने के लिए उपरोक्त वर्णित दोनों बातों पर एक साथ कार्यवाही करना शुरू करेंगे तो हम अपनी गरिमा व अस्मिता को बचाने में हो जायेंगे। किसी भी उत्पीड़न और अत्याचार का घटना में पीड़ितों को सुरक्षा, न्याय व राहत दिलाने के लिए प्रारंभिक रूप से पुलिस प्रशासन द्वारा उठायी जाने वाली कार्यवाहियों पर भी तेजी से हस्तक्षेप करने की आवश्यकता होती है, उसका अभाव साफ दिखता है। इसके कारण से पुलिस प्रशासन और न्यायापालिका जातिगत भावना से प्रेरित होकर निष्पक्ष कार्यवाही नहीं करते हैं जिसके फलस्वरूप 95 प्रतिशत दलित उत्पीड़न के मामलों में अत्याचारी बरी हो जाते हैं जो कि अत्यंत चिंता का विषय है। अत्याचार के बाद स्थानीय पुलिस में तत्काल प्रथम सूचना प्रतिवेदन (एफआईआर) सही धाराओं के अंतर्गत लिखवाना तथा निष्पक्ष रूप से जांच करवाना और सभी दोषियों को तुरंत गिरफ्तार करवाना तथा सही समय पर न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल करवाना आवश्यक है जिसमें हमारे कार्यकर्त्ता इस दिशा में पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाते हैं। अतः वास्तव में अत्याचारियों को सजा दिलवाना चाहते हैं और पीड़ित पक्ष को न्याय दिलवाना चाहते हैं तो इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया पर भी ध्यान देना जरूरी है। हालांकि पुलिस प्रशासन व सरकार पर दबाव डालने के लिए धरना प्रदर्शन भी जरूरी है।

जनवरी 2016 में एस.सी/एस.टी (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 में संशोधन हुआ है जिसमें दलित कार्यकर्त्ताओं व स्वयं सेवी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया गया है। नये संशोधन के अंतर्गत प्रत्येक दलित कार्यकर्त्ता व संगठन अब दलित व महिला उत्पीड़न के मामलों पुलिस प्रशासन से सीधी जानकारी मांग कर उनकी मदद करने के लिए अधिकृत किया गया है। इसके साथ ही पीड़ितो, उनके परिवार जनों व गवाहों को भी पूरा सम्मान व सुरक्षा देने का दायित्व पुलिस प्रशासन व विशेष न्यायालय पर डाला गया है। साथ ही साथ पीड़ितों को दी जाने वाली राहत राशि में भी काफी वृद्धि की गयी है। नये संशोधित कानून द्वारा जो लाभकारी व विशेष प्रावधान किये गये हैं, उसके बारे में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले कार्यकर्त्ता व संस्थाओं के पदाधिकारियों को जानकारी होना आवश्यक है। इसके लिए दलित अधिकार केन्द्र विशेष प्रयास कर इस जानकारी को राज्य के कोने – कोने तक पहुँचाने के लिए विशेष अभियान चला रहा है। अतः राज्य की प्रत्येक संस्था व दलित कार्यकर्त्ताओं से अपील की जाती है कि वे यदि वास्तव में सामाजिक न्याय व मानवीय गरिमा को प्राप्त करने के लिए नये संशोधन के बारे में जानकारी हासिल कर दलित आंदोलन को और ज्यादा मजबूत बना सकते हैं। इस संबंध में और विस्तृत जानकरी हेतु आप दलित अधिकार केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

निर्धन किसान जीवन

रक्त से सींचा वतन को वो धरा की धूल है।
बज्र सा आघात रहते उनके नन्हें फूल है।।

जिनके रक्तिम फाग हो कुर्सी व कोठी है सजे
जिनके बल पर आज भारत सीना है ताने खड़ा
क्या मिला बदले में उनको आज है
उनके सुत ही आज रोटी–कपड़े को मोहताज है।
गम नहीं फिर भी उन्हें, हिम्मत ही मन्त्र मूल है।।
रक्त से सींचा वतन.....

श्रम ही है श्रृंगार जिनका, अश्रु ही पहचान है।
गम ही जीवन साथी है, आती नहीं मुस्कान है।।
भरत भू के प्राणों का यह हाल है,
पीला चेहरा, तर पसीना और उलझे बाल है।
धन्य तेरी जिन्दगी, धन्य तेरा मूल है।।
रक्त से सींचा.....

रूखी रोटी आज तन का रक्त है सुखा रही।
सूखे स्तन से आज माता दूध है पिला रही।।
गाँधी, शास्त्री के अरमान मिट्टी हो गये।
बिन खिले ही वह सुमन क्यों सो गये।।
गगन चुम्बी कोठियों की नींव भी यह धूल है।
रक्त से सींचा.....

उनके बच्चो की दवा बिन अर्थियां है सज रही।
घायल मृगी से तड़पड़ाती, भरत भू भी रो रही।
क्या किया इस राष्ट्र ने उनके लिये।
शिक्षा भी एक ख्वाब है जिनके लिये।
अभिव्यक्ति भी उनके लिये कंकर–पत्थर एवं शूल है।
रक्त से सींचा वतन.....

ऐसे थे जार्ज वाशिंगटन

जार्ज वाशिंगटन को प्रतिदिन सवेरे–शाम टहलने की आदत थी, जब वे टहलने के लिए निकलते थे तो सामान्य वेश में अकेले ही जाना उनको प्रिय था, अपने दल–बल के साथ चलना उनको पसन्द नहीं था। इस कारण बहुत से लोग उनको पहचान नहीं पाते थे। इससे उन्हें लोगों के दुःख दर्द को करीब जानने से अवसर मिलता था।

एक दिन वे टहलने जा रहे थे, उन्होंने देखा कि कुछ श्रमिक (मज़दूर) एक भारी लट्ठे को छत पर चढ़ाने का प्रयास कर रहे है, वे अपने प्रयत्नों में सफल नहीं हो रहे थे, ऐसा लग रहा था कि केवल एक आदमी की कमी है, यदि और व्यक्ति लट्ठे के हाथ लगा दे तो वह ऊपर चढ़ जाये।

मज़दूरों का साहब खड़ा–खड़ा उन श्रमिकों पर रोब डाल रहा था व कर्कश वाणी में चीखकर और ताकत लगाने के लिय कह रहा था, राष्ट्रपति महोदय यह सब देख रहे थे। उन्होंने साहब से कहा, आप भी हाथ लगाकर इन मज़दूरों की मदद कर दो! वह साहब आवेश में आ गया व कहने लगा– मेरा काम है मज़दूरों से काम लेना, न कि स्वयं हाथ लगाना! अच्छा यह बात है? कहकर वाशिंगटन ने स्वयं भरपूर शक्ति के साथ दोनों हाथ लगा दिया।

लट्ठा ऊपर पहुंच गया। तब राष्ट्रपति ने मज़दूरों के साहब को सलाम साहब कहकर बोला, यदि फिर कभी किसी ऐसे काम की आवश्यकता पड़े तो मुझे बुला लेना– मेरा नाम जार्ज वाशिंगटन है। यह सुनते ही साहब के होश उड़ गये। वह राष्ट्रपति से क्षमा याचना करने लगे, राष्ट्रपति ने उसे इस शर्त पर क्षमा कर दिया कि भविष्य में वह भी मज़दूरों के कार्य में हाथ बंटायेगा। राष्ट्र कार्य, समाज कार्य में कोई बड़ा–छोटा नहीं होता।

इतना कहकर राष्ट्रपति महोदय वहां से चले गये, परन्तु अमेरिका के लोगों को बहुत बडी सीख व सन्देश दे गये।

युवा मण्डल ने बदला गाँव का ढाँचा

जन कल्याण नवयुवक मण्डल के युवाओं ने सेदरिया ढ़ाणी ग्राम पंचायत झाड़ला (फागी) अपने कार्यों से ढ़ाणी में अभूतपूर्व बदलाव किये, जो युवा वर्ग के लिये एक सीख एवं प्रेरणा है। सिकोईडिकोन संस्था ने सेदरिया ढ़ाणी में जन कल्याण नवयुवक मण्डल का गठन किया, जिसमें 15 बालिकाएं व 20 बालक शामिल हैं।

संस्था द्वारा युवा मण्डल के युवाओं का विभिन्न मुद्दों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, जेण्डर, जैविक कृषि आदि पर क्षमतावर्द्धन एवं जागरूक किया। इन मुद्दों पर सेदरिया ढ़ाणी के युवाओं की व्यापक समझ बनी तो ढ़ाणी के युवाओं ने कुछ कर गुजरने का संकल्प लिया व चल पड़े उसी राह पर!

शिक्षा:– सेदरिया ढ़ाणी के राजकीय प्राथमिक विद्यालय का अध्ययन कार्य अव्यवस्थित था। चार दीवारी टूटी हुयी, विद्यालय प्रांगण में कंटिली झाड़िया व घास, नवयुवक मण्डल के युवाओं ने तय किया, सरकार के सामने हाथ नहीं फैलायेंगे। उन्होंने ग्राम में जन सहयोग से राशि इकट्ठी की व स्वयं अथक श्रमदान कर विद्यालय में तारबन्दी की। पूरे विद्यालय प्रांगण की सफाई की, पास के कुऐं को गहरा कर पानी की मोटर लगवायी, ताकि विद्यालय छात्रों व अध्यापकों को मीठा पानी मिल सके।

इसके बाद युवाओं ने विद्यालय प्रांगण में करीब 100 पौधे लगवाये, जो आज विद्यालय प्रांगण को हरियाली युक्त कर युवाओं ने विद्यालयों की श्रमदान से पुताई व डेन्टिंग की। युवाओं के प्रयासों से शाला के अध्यापक समय पर आने लगे हैं।

ग्राम में टूटे–फूटे रास्ते आवागमन के अभाव विद्यार्थी (विशेषत बालिकाऐं) विद्यालय से शिक्षा छोड़ने को मजबूर होती थी। बरसात के मौसम में तो ग्राम से जोड़ने वाले रास्ते में दो–दो फुट पानी भर जाता था। यहाँ चार व दो पहिये वाहन तो क्या आमजन का पैदल चलना मुश्किल होता था।

तो ग्राम के युवा मण्डल सदस्यों ने स्वयं के ट्रेक्टरों से श्रमदान कर रात–दिन मेहनत कर 2.5 कि.मी. क्षतिग्रस्त रास्ते को सुधारकर ग्रेवल डाल दी, आज वहां आवागमन व्यवस्थित हुआ है। साथ ही 45 युवाओं को स्टेट ओपन से जोड़ शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल किया। ग्राम में 4 स्वयं सहायता समूह है जो सिकोईडिकोन के सहयोग से महिलाओं को स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास में जुटे है।

संस्था से सीख लेकर युवाओं ग्राम में रासायनिक खाद बीज के दुष्परिणामों पर्यावरण प्रदूषण एवं असाध्य बीमारियों आदि को लेकर ग्राम में चेतना पैदा की। ग्राम में युवाओं की मेहनत रंग लायी, ढ़ाणी में किसान देशी खाद–बीज काम में लेते हैं। ग्राम रासायनिक खाद–बीज मुक्त होने की ओर बढ़ रहा है।

सेदरिया ढ़ाणी के युवाओं ने ग्राम में आपसी समझाईश से ग्रामीणों को शराब मुक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर सामाज़िक बदलाव की दिशा में अनुकरणीय कार्य किया है।

ग्राम के मुकेश बैरवा स्मार्ट किसान है। इन्होंने एक बीघा में बीज़–प्रदर्शन एवं छायादार–फ़लदार पौधे लगाये हैं। पानी की टंकी का सहयोग संस्था से मिला– आज यह ग्राम क्षेत्र के अन्य ग्रामों के लिये सीख देने वाला व प्ररेणास्पद के रूप में उभरा है।

हरपाल बैरवा
अध्यक्ष, ब्लॉक युवा मंच, फागी

पंचायत राज प्रतिनिधि –कार्यशाला

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति फागी के संयुक्त तत्वावधान में 11 जनवरी, 2021 को सिकोईडिकोन परिसर, माधोराजपुरा में फागी–माधोराजपुरा क्षेत्र के सरपंच महानुभावों के साथ संवाद व मुद्दों पर साझा समझ बनाने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में 35 सरपंचों ने भाग ले अपनी सक्रिय भूमिका अदा की व संस्था एवं किसान सेवा समिति फागी द्वारा क्षेत्र के सामाज़िक–आर्थिक विकास हेतु किये गये कार्यों की सराहना की।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि फागी विकास अधिकारी महोदय श्री नारायण सिंह का भी K.S.S. का मनोबल बढ़ाने वाला प्रेरणादायी उद्‌बोधन मिला। इनके अलावा फागी सरपंच संघ के अध्यक्ष भंवर सिंह पचाला, माधोराजपुरा सरपंच संघ अध्यक्ष हीरा देवी जाट, भांकरोटा सरपंच गिर्राज शर्मा, हीरापुरा सरपंच हीरा लाल मीणा, लदाना सरपंच हेमलता दाधीच आदि सरपंचों ने कार्यशाला को सम्बोधित किया व आपसी समन्वय पर बल दिया।

19 मार्च को चाकसू में सरपंचों की कार्यशाला में चाकसू विकास अधिकारी महोदया कृष्णा माहेश्वरी जी ने सरपंचों एवं किसान सेवा समिति के प्रतिनिधियों को आपसी समन्वय से मुद्दों व विकास कार्यों पर कार्य करने की अपील की व आपसी साझा समझ बढ़ाने पर जोर दिया। विशेषतः संस्था की क्षिप्रा माथुर व आलोक व्यास ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में चाकसू–कोटखावदा क्षेत्र के सरपंच महानुभावों ने शिरकत कर सक्रिय भूमिका अदा की।

इसी प्रकार निवाई, मालपुरा, शाहबाद में संस्था किसान सेवा समितियों ने सरपंचों की कार्यशाला आयोजित कर ग्राम पंचायतें व किसान सेवा समिति के बीच सार्थक संवाद कर एक–दूसरे के साथ मिलकर समाज के सभी समुदायों के विकास हेतु मिलकर काम करने की रूपरेखा बनी।

स्थानीय विकास के मुद्दों एवं जन समस्याओं पर जन संवाद

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति फागी के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय विकास के मुद्दों एवं समस्याओं पर जन संवाद कार्यशाला 18 मार्च, 2021 को सिकोईडिकोन परिसर माधोराजपुरा में आयोजित की गयी। कार्यशाला में क्षेत्र के सरकारी अधिकारियों के विभिन्न स्वयं–सेवी संगठनों के प्रतिनिधियों की सक्रिय सहभागिता रही।

इस अवसर पर फागी विकास अधिकारी महोदय श्री नारायण सिंह ने सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के

बीच आपसी समन्वयन व तालमेल से ग्राम स्तर पर विकास की गति का नया आयाम मिल सकता है व सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच सकता है।

माधोराजपुरा नायब तहसीलदार श्री भँवर सिंह ने लोक सेवा अधिनियम की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी दिनेश शर्मा, कृषि अधिकारी धर्मपाल बैरवा, पशु चिकित्साधिकारी डॉ. अनिल आर्य एवं शिक्षा अधिकारी तथा संस्था के निदेशक पी. एम. पॉल ने भी खुले सत्र में अपने विचार रखे, किसान सेवा समिति के प्रतिनिधियों, युवा मन्च, महिला संगठनों के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व सुझाव रखे।

मालपुरा में स्थानीय विकास के मुद्दों एवं जन समस्याओं पर जन संवाद, कार्यशाला में सरकारी अधिकारियों, जन प्रतिनिधियों एवं श्री कल्याण किसान सेवा समिति मालपुरा के प्रतिनिधियों ने सक्रियता से भाग लिया व क्षेत्र के मुद्दों पर गहनता से चर्चा कर उनके समाधान हेतु विभिन्न विकल्पों पर विचार हुआ।

कार्यशाला में पंचायत प्रसार अधिकारी, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, कृषि अधिकारी, चिकित्साधिकारी महोदय सहित मालपुरा के प्रधान सकराम चौपड़ा, जिला परिषद सदस्य छोगाराम गुर्जर, नगरपालिका अध्यक्ष, सोनिया सोनी, किसान सेवा समिति महासंघ उपाध्यक्ष कैलाश गुर्जर, पंचायत समिति सदस्य गोपाल गुर्जर सहित पंचायत प्रतिनिधियों, पार्षदों एवं किसान सेवा समिति के पदाधिकारियों ने अपने विचार रखे एवं आपसी समन्वय पर बल दिया।

संस्था द्वारा उठाये जाने वाले विकास के मुद्दों पर जनप्रतिनिधियों व सरकारी अधिकारियों ने अपने–अपने स्तर पर सहयोग का आश्वासन दिया व सरकारी योजनाएं जमीनी स्तर तक पहुंचे एवं साझा प्रयास पर सहमति बनी। **चाकसू** में आयोजित इस जन संवाद में ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी सौम्य पण्डित, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रकाश मीणा, महिला अधिकारिता विभाग अधिकारी नीतू शर्मा एवं कृषि विशेषज्ञों के अलावा चाकसू क्षेत्र के पंचायत प्रतिनिधियों के साथ किसान सेवा समिति चाकसू के पदाधिकारियों ने आपसी चर्चा कर क्षेत्र के मुद्दों पर साझा समझ बनाकर समन्वय के साथ ग्रामों में विकास को सतत् गति देने की रूपरेखा बनी। संस्था प्रभारी बलवीर सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

निवाई में आयोजित जन संवाद कार्यशाला में निवाई प्रधान रामवतार लांगड़ी, ब्लॉक चिकित्साधिकारी शैलेन्द्र चौधरी, महिला बाल विकास अधिकारी अनुजा शर्मा, कृषि अधिकारी भंवर लाल बैरवा व किसान सेवा समिति निवाई व सिकोईडिकोन प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी रही व संस्था पंचायत प्रतिनिधियों एवं सरकारी अधिकारियों के बीच समन्वय से मुद्दों पर कार्य करने की रूपरेखा बनी।

सभी ब्लॉकों में सरकारी अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने सिकोईडिकोन व किसान सेवा समिति द्वारा समन्वय कार्यशाला आयोजित करने की सराहना की व कहा इससे ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन से वंचित व जरूरतमन्दों को राहत मिलेगी।

मालपुरा किसान सेवा समिति व युवा मंच के मुद्दों के समाधान का प्रयास

श्री कल्याण किसान सेवा समिति मालपुरा के प्रतिनिधि मण्डल ने किसान सेवा समिति महासंघ उपाध्यक्ष श्री कैलाश गुर्जर एवं किसान सेवा समिति मालपुरा अध्यक्ष श्री राम लाल के नेतृत्व में मालपुरा क्षेत्र के राजस्व विभाग के नक्शे फटे होने से किसानों को सीमाज्ञान में आ रही समस्या के समाधान हेतु राज्य के मुख्य सचिव महोदय राजस्व मन्त्री महोदय श्री हरीश चौधरी, सम्भागीय आयुक्त महोदय, अजमेर से सीधा संवाद किया एवं मालपुरा क्षेत्र के किसान हित में अविलम्ब ट्रेस नक्शा उपलब्ध करवाने का आग्रह किया।

उन्होंने बताया मालपुरा ब्लॉक में जमीन विवादों का निपटारा करने व अपनी जमीन पर सीमा ज्ञान व जमीन सेटलमेन्ट हेतु कोई कारगर दस्तावेज (ट्रेस नक्शे) नहीं है इससे दिन–प्रतिदिन किसानों के जमीनी विवाद बढ़ते जा रहे हैं। अतः ट्रेस नक्शे अवलिम्ब उपलब्ध होने से सीमा ज्ञान के साथ विवादों का निस्तारण हो सकता है।

मन्त्री महोदय व सम्बन्धित अधिकारियों ने मामले की गम्भीरता समझ अतिशीघ्र ट्रेस नक्शे उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

प्रतिनिधि मण्डल में रामसहाय शर्मा, जगदीश शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, गोपाल लाल चौधरी, प्रहलाद चौधरी (पचेवर) आदि किसान प्रतिनिधि शामिल थे।

मालपुरा ब्लॉक युवा मंच के अध्यक्ष जीतराम चौधरी के नेतृत्व में युवा मंच प्रतिनिधियों ने मालपुरा उपखण्ड अधिकारी महोदय को ज्ञापन देकर क्षेत्र में (खाद्यान्न सुरक्षा से वंचित लोगों (तथ्यात्मक आंकड़े जुटाकर) के नाम खाद्य सुरक्षा में जोड़ने एवं प्रधानमन्त्री आवास योजना का जरूरतमन्द लोगों को लाभ देने का आग्रह किया। इस पर उपखण्ड अधिकारी जी ने सम्बन्धित अधिकारियों को उक्त सम्बन्ध में निर्देश दिये। परिणाम स्वरूप लोगों की खाद्य सुरक्षा में नाम जोड़ने की प्रक्रिया पुनः शुरू हो गयी व प्रधानमन्त्री आवास योजना पर भी जरूरतमंदों को चिन्हित करना शुरू हो गया है।

प्रतिनिधि मण्डल में कोमल तँवर, राधेश्याम नाथ, पूजा चौधरी आदि युवा शामिल थे।

कोरोना संकट – सहयोग

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समितियों के प्रतिनिधियों ने जयपुर, टोंक एवं बारां जिले में (कोरोना काल) राष्ट्रीय आपदा के समय समुदायों को साथ लेकर कोरोना काल प्रभावित पलायन करते श्रमिकों, घुमक्कड़ जातियों, बेहद गरीब तबके के करीब 7000 लोगों तक खाद्य सामग्री पहुंचाकर उनको राहत पहुंचायी व स्थानीय प्रशासन एवं पंचायत प्रतिनिधियों के साथ समन्वय तालमेल से विभिन्न संगठनों के माध्यम से ग्रामों में जागरूकता अभियान चलाया।

लोगों को कोरोना के दुष्प्रभावों से आगाह करते हुये ग्रामों एवं कस्बों में सार्वजनिक स्थलों पर लोगों को जागरूक करने के लिये पोस्टर लगवाये, जिनमें कोरोना संकट से निपटने के लिये सरकार की गाईड लाईन की पालना के साथ स्वयं की जीवनशैली बदलने व अफ़वाहों से सावधान रहने की अपील एवं आग्रह किया गया।

साथ ही संस्था के प्रतिनिधियों ने करीब 25000 मास्क एवं 3000 सेनेटाईजर्स भी गरीब तबके में वितरित किये गये।

आदिवासी अंचल के किसानों ने कृषि विज्ञान केंद्र का किया भ्रमण

शाहबाद (हुक्मनामा समाचार)। सीकोईडीकौन संस्था शाहबाद द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र कोटा एवं फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी अंता मे 30किसानों का शैक्षणिक भ्रमण हुआ। प्रोजेक्ट समन्वयक पवन शर्मा द्वारा सभी किसानों को शैक्षणिक भ्रमण पर प्रकाश डालते हुए जानकारी दी कि हम लोग जैविक खेती किस प्रकार बढ़ा सकते हैं और न्यूटेशन गार्डन फलदार

किसान मुरारी लाल मथुरा लाल बद्रीलाल चंदन सिंह आदि किसानों द्वारा डॉ रूप सिंह से पपीता पाला, दूध डेयरी ,वर्मी कंपोस्ट आदि की जानकारी विस्तार

मांग

संभागीय आयुक्त को सौंपा ज्ञापन

ग्रामीणों ने की राजस्व रिकार्ड दुरुस्त कराने की मांग

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

मालपुरा. कल्याण किसान सेवा समिति की ओर से संभागीय आयुक्त अजमेर को सौंपे ज्ञापन में मालपुरा क्षेत्र के राजस्व रिकार्ड दुरुस्त कराने की मांग की गई है।

समिति अध्यक्ष रामलाल के नेतृत्व में किसान सेवा समिति के प्रदेश उपाध्यक्ष कैलाश गुर्जर सहित कार्यकारिणी सदस्यों का प्रतिनिधिमंडल अजमेर में संभागीय आयुक्त वीणा प्रधान से मिलकर ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में अवगत कराया कि मालपुरा ब्लॉक में जमीन विवादों का समाधान करने व अपनी जमीन का सीमाज्ञान करवाने सहित जमीन के अन्य मामलो के निस्तारण के लिए राजस्व रिकार्ड जीर्णशीर्ण होने के चलते तहसील कार्यालय में दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। ज्ञापन में बताया कि मालपुरा क्षेत्र में सेटलमेंट हुए साठ वर्ष से अधिक हो चुके हैं। इसके चलते सभी नजरी नक्शे पूरी तरह से जीर्णशीर्ण हो चुके हैं। इस बारे में पूर्व में कई बार ज्ञापन सौंपे गए हैं। सरकार द्वारा हर बार केवल आश्वासन के अलावा समस्या का समाधान नहीं करने से क्षेत्र के किसानों के जमीन विवाद बढ़ते जा रहे हैं। किसानों को अपनी स्वयं की जमीन के सीमा ज्ञान करवाने में परेशानी हो रही है। ज्ञापन में मालपुरा ब्लॉक का नए सिरे से सेटलमेंट करवाए जाने एवं नजरी नक्शे उपलब्ध करवाया जाए, जिससे किसानों को राहत मिल सके।

मालपुरा कल्याण किसान समिति के पदाधिकारी संभागीय आयुक्त को ज्ञापन सौंपते हुए।

किसान सेवा समिति महासंघ

आज़ादी के उपरान्त देश में विभिन्न संगठन अलग–अलग वर्गों के मुद्दों को लेकर किसान, गरीब व वंचितों की आवाज उठा रहे हैं। इसी क्रम में किसानों व गरीबों की आवाज को उठाने के लिए राज्य में अलग–अलग संगठनों में किसान सेवा समिति कार्य कर रही है। किसानों व वंचितों के मुद्दों की राज्य–स्तर पर आवाज़ को मज़बूत करने के लिए 2004 में किसान सेवा समिति महासंघ का गठन हुआ जो सतत् रूप से किसानों, गरीबों, वंचितों, महिलाओं व दलितों की आवाज़ को मज़बूत कर रही है।

महासंघ केवल जड़स्तर के मुद्दों को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर ले जाता है अपितु राज्य व राष्ट्र स्तर पर नीतियों को जड़स्तर तक पहुंचाने व मुख्य रूप से क्रियान्वित हेतु कार्य करती है।

परिचय :-

किसान सेवा समिति महासंघ राज्य स्तरीय जन संगठन है– जो किसानों, महिलाओं, दलित, आदिवासी एवं वंचित वर्ग के सामाजिक–आर्थिक विकास एवं इनके हितों से जुड़े मुद्दों व अधिकारों की क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पैरवी करना है। जो विशुद्ध गैर राजनीति जन आन्दोलन पर आधारित है। महासंघ का प्रमुख कार्य राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दों को प्रकाश में लाना व उन पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाना है। समान विचारधारा वाले संगठनों को संगठित करने के साथ–साथ उसमें राष्ट्रीय बोध, समतामूलक, शोषण मुक्त समाज की रचना आदि नीतियों के प्रति सहमति बनाना भी महासंघ का लक्ष्य है। हम मूल्य आधारित ऐसी शक्ति हासिल करना चाहते हैं कि सरकारों को ऐसी नीतियों को बदलने को मजबूर करने की क्षमता हासिल कर सके जो जनहित की न हो। स्थानीय ब्लॉक एवं जिला स्तर पर संगठनों एवं समुदाय प्रतिनिधियों की जागरूकता एवं क्षमता वृद्धि करना ताकि वे सामुदायिक अधिकारों को वास्तविक रूप से लागू करने एवं सुनिश्चित करने में स्थानीय सुशासन प्रक्रिया, पंचायत राज एवं जन–आन्दोलनों के साथ सहज़ता से जुड़े रहे। ऐसे मुद्दों पर प्राथमिकता रहेगी, जो आमजन से जुड़े हुए हों, विशेषतः प्रयास– दलित, वंचित, महिला, बच्चे व किसान से जुड़े होंगे।

वर्तमान समय के कार्य :-

जलवायु परिवर्तन, शिक्षा की विसंगतियों एवं समानीकरण, महंगाई, राहत कार्य सर्वे, जैव परिवर्धित एवं जैव विविधता, अकाल, चारा–पानी, सार्वजनिक वितरण, असंगठित मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिले इस सन्दर्भ में महिला उत्पीड़न, भू–अधिकार, नरेगा, घुम्मकड़ जातियों के हितों पर, राज्य बजट पर, स्वास्थ्य।

भावी योजना:- राज्य स्तरीय संगठन के प्रतिनिधि राज्य के सभी जिलों से जुड़े हों तथा हम एकजुट होकर राज्यस्तरीय प्रयासों को ज्यादा गति दो पायें।

प्राथमिकताएं :-

जलवायु परिवर्तन ,राज्य की स्थायी अकाल एवं जलनीति बनवाना व प्रभावी क्रियान्वयन करवाने का सतत प्रयास। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ समुदायों तक पहुँचाना सुनिश्चित करना। पंचायतों को उनके अधिकार दिलवाना। खाद्य सुरक्षा की बिल की अनुपालन करना। शिक्षा के अधिकार बिल की सही अनुपालना।

महिलाओं व दलितों के अधिकारों को दिलवाना। भू–अधिकार से वंचितों को अपना अधिकार दिलवाना। साझा समझ वाली संस्थाओं से नेटवर्किंग

सीख :- जीवन वास्तव में अनवरत सीखने एवं विकास करने की प्रक्रिया है, सीखने की प्रक्रिया प्रभावी एवं उपयोगी हों, अतः प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने साथ–साथ उस समाज की ताकत एवं कमज़ोरियों से परिचित हो जिसका वह अंग है।

किसान सेवा समिति महासंघ

स्वराज कैम्पस, एफ-159-160, सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर-302022 (राज.)

टेलीफोन : 0141-2771488, 7414038811/22/33 फैक्स : 0141-2770330

UNIQUE PRINT IN • 9414363099